

नीट पेपर लीक पर आर-पार की लड़ाई, पश्चिम चंपारण में छात्रों का प्रतिरोध मार्च और प्रदर्शन

शिवभक्तों को सौगात
26 जुलाई से दौड़ेगी पटना-इसलामपुर स्पेशल ट्रेन, रेलवे ने जारी किया शेड्यूल

बिहार पत्रिका | पश्चिम चंपारण

नरकटियागंज। नीट पेपर लीक मामले को लेकर नरकटियागंज में बड़ी संख्या में छात्र सड़कों पर उतर आए और ज़ोरदार विरोध प्रदर्शन किया। आक्रोशित छात्रों ने आरओबी से मार्च निकाला, जो शिवगंज, नागेंद्र तिवारी चौक होते हुए शहीद चौक पहुंचकर समाप्त हुआ। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने केंद्र सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग की। छात्रों का कहना था कि नीट पेपर लीक से देशभर के लाखों अभ्यर्थियों का भविष्य प्रभावित हुआ है। उन्होंने दोषियों के खिलाफ



त्वरित कार्रवाई और निष्पक्ष जांच की मांग की। प्रदर्शन को देखते हुए प्रशासन पूरी तरह सतर्क रहा। एसडीएम अभिजीत कुमार गोविंदा, एसडीपीओ जय प्रकाश सिंह, बीडीओ सूरज कुमार सिंह, सीओ शमन प्रकाश, आरओ अशोक

कुमार, पुलिस निरीक्षक संतोष शर्मा, शिकारपुर थानाध्यक्ष मनोज कुमार सिंह, इनराध थानाध्यक्ष संतोष कुमार सहित कई थानों की पुलिस और जिला पुलिस बल के जवान पूरे मार्च के दौरान तैनात रहे। स्थिति पूरी तरह शांतिपूर्ण रही।

मलजोर चेक पोस्ट पर बड़ी कार्रवाई, 2,824 लीटर अवैध विदेशी शराब जब्त



बिहार पत्रिका | बांका

बाँसी। बाँसी थाना क्षेत्र स्थित भलजोर चेक पोस्ट पर मद्य निषेध विभाग ने गुप्त सूचना के आधार पर बड़ी कार्रवाई करते हुए भारी मात्रा में अवैध विदेशी शराब बरामद की है। कार्रवाई सहायक अवर निरीक्षक रोशन कुमार के नेतृत्व में की गई। जांच के दौरान झारखंड के हंसडीहा की ओर से आ रहे टाटा कंपनी के छह चक्का ट्रक को रोककर तलाशी ली गई। ट्रक के डाले में तिरपाल से ढककर रखे अखाद्य एवं सड़े-गले मक्के से बने कुरकुरे/चिप्स के बोरो के नीचे बड़ी चतुराई से विदेशी शराब छिपाकर रखी गई थी। तलाशी में क्लासिक ओल्ड हैबिट

हिस्की (ब्लैंडेड विद इंपोर्टेड स्कोच माल्ट्स एंड इंडियन ग्रेन स्पिरिट्स) ब्रांड की 8,568 बोतलें, जिनकी कुल मात्रा 2,824.200 लीटर है,बरामद की गई। मद्य निषेध विभाग ने मौके से गंगाधर यादव पिता-शंकर यादव, निवासी चिहूँटिया, थाना नारायणपुर, जिला जामताड़ा (झारखंड) को गिरफ्तार कर लिया। साथ ही शराब परिवहन में प्रयुक्त ट्रक को भी जब्त कर लिया गया। आगे की जांच निरीक्षक मद्य निषेध रंजीव कुमार झा के नेतृत्व में जारी है। विभाग यह पता लगाने में जुटा है कि शराब की खेप किस स्थान पर पहुँचाई जानी थी तथा इस तस्करी नेटवर्क में और कौन-कौन लोग शामिल हैं।

सेवानिवृत्त सैनिक ने मुख्यमंत्री से लगाई न्याय की गुहार

बिहार पत्रिका | गयाजी

बोधगया। बोधगया प्रखंड के ग्राम नीमा निवासी सेवानिवृत्त सैनिक, वृद्ध एवं हृदय रोगी अनिल कुमार शर्मा ने मुख्यमंत्री सचिवालय के सहयोग (RTMS) पोर्टल पर आवेदन देकर आरोप लगाया है कि अपर समाहर्ता (राजस्व), गया द्वारा अपरित प्रभावी आदेश का लगभग चार वर्षों से अनुपालन नहीं कराया जा रहा है, जबकि उनके अनुसार उक्त आदेश पर माननीय पटना उच्च न्यायालय द्वारा कोई प्रभावी स्थगान (स्टे) आदेश नहीं है। शिकायतकर्ता का कहना है कि अपर समाहर्ता (राजस्व), गया के आदेश को प्रतिवादी ने बिहार भूमि न्यायाधिकरण (BLT) में चुनौती दी थी, लेकिन न्यायाधिकरण ने हस्तक्षेप करने से इनकार करते हुए आवेदन खारिज कर दिया। इसके बावजूद बोधगया अंचल कार्यालय द्वारा आदेश का अनुपालन आज तक नहीं किया गया है। आवेदन में आरोप लगाया गया है कि सहयोग (RTMS) पोर्टल पर शिकायत दर्ज होने के बाद संबंधित हल्का कर्मचारी अभिमन्यु कुमार ने न तो शिकायतकर्ता से संपर्क किया , न कोई नोटिस दिया, न उनका पक्ष सुना और न ही उपलब्ध अभिलेखों का समुचित परीक्षण किया। शिकायतकर्ता का आरोप है कि प्रतिवेदन एकपक्षीय रूप से तैयार कर पोर्टल पर अपलोड कर दिया गया तथा प्रतिवादी पक्ष की बातों के आधार पर रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। इन आरोपों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हुई है। शिकायत में यह भी कहा गया है कि इसी प्रतिवेदन के आधार पर तत्कालीन अंचलाधिकारी को वास्तविक तथ्यों से अवगत नहीं कराया गया और वर्तमान अंचलाधिकारी को भी भ्रमित करने का प्रयास किया जा रहा है। आवेदनकर्ता का कहना है कि उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार



पटना उच्च न्यायालय द्वारा अपर समाहर्ता (राजस्व), गया के आदेश के अनुपालन पर कोई प्रभावी स्थगान आदेश नहीं है, फिर भी सहयोग पोर्टल पर यह प्रतिवेदन दिया गया कि मामला उच्च न्यायालय में लंबित होने के कारण आगे की कार्रवाई न्यायालय के विरुद्ध विधिसम्मत कार्रवाई की मांग की है। अब सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि यदि सक्षम प्राधिकारी का आदेश प्रभावी है, बिहार भूमि न्यायाधिकरण में चुनौती भी असफल हो चुकी है और शिकायतकर्ता के अनुसार आदेश पर कोई प्रभावी स्थगान नहीं है, तो बोधगया अंचल कार्यालय द्वारा अपर समाहर्ता (राजस्व), गया के आदेश का अनुपालन आखिर कब तक सुनिश्चित किया जाएगा? इस मामले पर अब सभी की निगाहें प्रशासन की आगामी कार्रवाई पर टिकी हैं।

विद्यालय में पढ़ने वाली छात्राओं को अपराधों की जानकारी देने के साथ ही पढ़ाया गया, कानून का पाठ

बिहार पत्रिका | बांका

बाँसी। बाज़ार स्थित एलएनडी प्रोजेक्ट बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में शुक्रवार को विद्यालय में पढ़ने वाली विभिन्न वर्ग के छात्रों को कानून के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से पुलिस टीम के द्वारा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य रूप से मानव व्यापार निरोध ईकाई, कमजोर वर्ग, अपराध अनुसंधान विभाग के तत्वावधान में महिला पुलिस थाना सदर बांका और बाँसी थाना से संयुक्त रूप से छात्राओं के बीच महिला सुरक्षा से संबंधित विभिन्न कानूनों एवं विभिन्न अपराधों की जानकारी दी। कार्यक्रम की शुरुआत सुरक्षा से संबंधित विभिन्न कानूनों की जानकारी दी। कार्यक्रम का स्वागत वाचन किया। बाँका महिला थाना से आए एसआई राजू पाण्डे ने छात्राओं को संबोधित करते हुए कहा कि छात्राओं को अपराध और अपराध, से संबंधित कानूनों की जानकारी होनी चाहिये। साथ ही अनैतिक देह व्यापार अधिनियम 1986 की धारा 5 एवं 6, पॉक्सो एक्ट,2012,



सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000, महिला अपराध बीएनएस 2023, सहित अन्य धाराओं की विशेष जानकारी भी दी। छात्राओं को गंभीर अपराधों जैसे - बालात्कार,यौन शोषण, छेड़छाानी लैंगिक उत्पीडन, दहेज हत्या, बालालिंग अपहरण सहित पहचान की चोरी, निजता का उल्लंघन, अश्लील सामग्री को इलेक्ट्रानिक रूप से प्रकाशन सहित अन्य जानकारी दी गई। बाँसी थाना एसआई प्रमोद पासवान ने नया संवेरा 3.0 जन जागरूकता अभियान से संबंधित छात्राओं को जानकारी

देते हुए कहा कि मानव/ बाल तस्करी के अन्तर्गत यौन शोषण,भ्रम शोषण,अंगों का गैर कानूनी प्रत्यापण,डांस बार, ऑर्केस्ट्रा आदि में शोषण, सेक्स टूरिज्म में अपराध तेजी से बढ़ रहा है। इन खतरों की पहचान करना जरूरी है। अपने आसपास के नए एवं संदिग्ध व्यक्तियों पर नजर रखने की सलाह दी। किसी भी नौकरी अथवा विवाह प्रस्ताव को स्वीकार करने से पहले पूरी जाँच - पड़ताल करने, बच्चों को अनजान व्यक्तियों से सावधान रखने, किसी व्यक्ति पर मानव तस्करी से संबंधित संदेह होने, पर

बिहार पत्रिका | पटना

श्रावणी मेला के दौरान श्रद्धालुओं की अतिरिक्त भीड़ को देखते हुए पूर्व मध्य रेल ने पटना और इसलामपुर के बीच श्रावणी मेला स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है। यह विशेष ट्रेन 26 जुलाई से 30 सितंबर तक कुल 29 ट्रिप संचालित होगी। ट्रेन का परिचालन 19313/19314 एवं 19321/19322 इंदौर-पटना एक्सप्रेस के रैक से 03297/03298 नंबर के साथ किया जाएगा। रेलवे के अनुसार, गाड़ी संख्या 03297 पटना-इसलामपुर श्रावणी मेला स्पेशल 26 जुलाई से 29 सितंबर तक प्रत्येक



मंगलवार, गुरुवार और रविवार को पटना जंक्शन से शाम 4:10 बजे रवाना होगी। यह ट्रेन राजेंद्रनगर, पटना साहिब, फतुहा, दनियावां बाजार हॉल्ट, हिलसा और एंकरगराय स्टेशनों पर ठहरते हुए शाम 7:00 बजे इसलामपुर पहुंचेगी। वहीं, गाड़ी संख्या 03298 इसलामपुर-पटना श्रावणी मेला स्पेशल 27 जुलाई से 30 सितंबर

तक प्रत्येक सोमवार, बुधवार और शुक्रवार को सुबह 7:45 बजे इसलामपुर से प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन एंकरगराया, हिलसा, दनियावां बाजार हॉल्ट, फतुहा, पटना साहिब और राजेंद्रनगर स्टेशन पर रुकते हुए सुबह 11:00 बजे पटना जंक्शन पहुंचेगी। पूर्व मध्य रेल के सीपीआरओ सरस्वती चन्द्र ने बताया कि श्रावणी मेला के दौरान श्रद्धालुओं की बढ़ती भीड़ को देखते हुए इस विशेष ट्रेन का परिचालन किया जा रहा है, जिससे यात्रियों को सुगम, सुरक्षित और सुविधाजनक यात्रा उपलब्ध हो सके। यात्रियों से समय से पहले स्टेशन पहुंचने और रेलवे द्वारा जारी निर्देशों का पालन करने की अपील की गई है।

पटना में खतरे के निशान की ओर बढ़ी गंगा, नावों से पलायन शुरू; प्रशासन अलर्ट



बिहार पत्रिका | पटना

राजधानी में गंगा के लगातार बढ़ते जलस्तर का दुष्प्रभाव अब दियारा क्षेत्रों में दिखने लगा है। तेज बहाव के बीच दियारा के लोग नावों पर मवेशियों को लेकर सुरक्षित स्थानों की ओर जाने लगे हैं। जलकुंभी के बड़े-बड़े गुच्छों के साथ तेज धारा में जर्जर बिना निबंधन की नावों का संचालन दुर्घटना की आशंका को बढ़ा रहा है। इसके अलावा दीधा में जेपी सेतु के समानांतर बन रहे नए गंगा पुल का निर्माण कार्य भी जलस्तर बढ़ने से प्रभावित हो गया है। इसके पिलर लगभग पानी में डूब गए हैं। इससे निर्माण एजेंसी ने अपनी कई गतिविधियां रोक दी हैं। गंगा में बढ़े जलस्तर का असर राष्ट्रीय जलमार्ग-1 (एनडब्ल्यू-1) पर भी हुआ है। वाराणसी से हल्द्वीय के बीच चलने वाले

मालवाहक जहाज अब गांवों के किनारों से हटकर दियारा की ओर से गुजर रहे हैं। बढ़ते जलस्तर और तेज धारा को देखते हुए जहाजों का मार्ग बदला गया है। वहीं बड़े वाहनों को भी पानी के जहाज के माध्यम से गंगा पार कराया जा रहा है।
24 घंटे में 24 सेंटीमीटर बढ़ा जलस्तर:-
बाढ़ नियंत्रण विभाग के अनुसार शुक्रवार को दीधा घाट पर गंगा का जलस्तर 24 घंटे में 24 सेंटीमीटर बढ़ कर 46.97 मीटर दर्ज किया गया। यह खतरे के निशान 50.45 मीटर से अभी 3.48 मीटर नीचे है। गांधी घाट पर जलस्तर 46.53 मीटर पहुंच गया, जब एक दिन में 16 सेंटीमीटर की वृद्धि दर्ज की गई। यहां जलस्तर अभी खतरे के निशान से 2.07 मीटर नीचे है।

सौढ़ भरतखण्ड में बाल गंगाधर तिलक की जयंती मनाई गई

बिहार पत्रिका | खगड़िया

जिले के परबता प्रखंड स्थित मध्य विद्यालय सौढ़ भरतखण्ड में गुरुवार को महान स्वतंत्रता सेनानी, प्रखर राष्ट्रवादी नेता एवं समाज सुधारक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर आयोजित

कार्यक्रम में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी तथा उनके जीवन, विचारों और स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरीय शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिक्षक सिद्धार्थ कुमार ने कहा कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम के

इतिहास में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। उनका जन्म 23 जुलाई 1856 को महाराष्ट्र के रत्नागिरी में हुआ था। वे एक महान स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, दार्शनिक, शिक्षाविद् और प्रखर राष्ट्रवादी नेता थे, जिन्होंने देश में स्वराज की अलख जगाने का कार्य किया। उन्होंने कहा कि छात्र जीवन

से ही तिलक में देशभक्ति और स्वतंत्र चिंतन की भावना कूट-कूटकर भरी थी। उनका प्रसिद्ध उद्घोष "स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा" भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरणास्रोत बना और इसने लाखों भारतीयों में आजादी की चेतना का संचार किया। सिद्धार्थ कुमार ने बताया कि बाल गंगाधर तिलक ने

‘गीता रहस्य’ जैसी महत्वपूर्ण पुस्तक की रचना की। उन्होंने मराठी समाचार पत्र ‘केसरी’ और अंग्रेजी समाचार पत्र ‘द मराठा’ के माध्यम से देशवासियों में राजनीतिक जागरूकता और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। शिक्षक निरंजन कुमार ने कहा कि लोकमान्य तिलक ने शिक्षा को राष्ट्रीय जागरण का सशक्त माध्यम

माना। उन्होंने अपने विचारों और लेखनी के माध्यम से युवाओं में राष्ट्रप्रेम, आत्मसम्मान और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने का कार्य किया। उनका जीवन आज भी देशभक्ति, नेतृत्व और संघर्ष की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों से लोकमान्य तिलक के आदर्शों को अपनाने आह्वान किया गया।

नीट में शानदार सफलता पर छात्रा को किया सम्मानित



बिहार पत्रिका | गया जी

श्री महावीर सोशल डेवलपमेंट फाउंडेशन की ओर से नीट परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली छात्रा खुशी कुमारी को उनके आवास पर जाकर सम्मानित किया गया। खुशी कुमारी ने नीट परीक्षा में 577 अंक प्राप्त कर ऑल इंडिया रैंक 19384 हासिल की है। इस उपलब्धि पर फाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने तुतबाड़ी गंगा महल, गया स्थित उनके अस्थायी आवास पर पहुंचकर छात्रा एवं उनके परिवार को बधाई दी। इस अवसर पर खुशी कुमारी के पिता राजीव कुमार और माता रिमझिम कुमारी को भी सम्मानित किया गया। फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने कहा कि खुशी की सफलता जिले के विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने छात्रा के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि कठिन परिश्रम, लगन और आत्मविश्वास से हर लक्ष्य हासिल किया जा सकता है। परिवार ने सम्मान के लिए फाउंडेशन का आभार व्यक्त किया।

कुमार चन्दन । बिहार पत्रिका

बांका। जिले में सहकारिता आधारित विकास को नई गति देने के उद्देश्य से शुक्रवार को समाहरणालय स्थित मिनी सभागार में जिला पदाधिकारी अंशुल अग्रवाल की अध्यक्षता में जिला सहकारी विकास समिति की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में सहकारिता विभाग की विभिन्न योजनाओं की समीक्षा करते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने, स्वरोजगार को बढ़ावा देने तथा सरकारी सेवाओं की पहुंच बढ़ाने के लिए कई अहम निर्णय लिए गए। बैठक के दौरान जिला पदाधिकारी ने स्पष्ट कहा कि सहकारी समितियां केवल प्रशासनिक इकाई नहीं, बल्कि ग्रामीण विकास और रोजगार सृजन का मजबूत माध्यम हैं। उन्होंने जिला सहकारिता पदाधिकारी को निर्देश दिया कि बकरी पालन, फल एवं सब्जी उत्पादन, मत्स्यजीवी



सहकारी समिति, बुनकर सहकारी समिति तथा मधुमक्खी पालन से संबंधित विस्तृत परियोजना प्रस्ताव शीघ्र तैयार कर समिति के समक्ष प्रस्तुत किए जाएं, ताकि योजनाओं का प्रभावी और समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा सके।

स्थानीय बुनकरों को मिलेगा नया मंच

जिला पदाधिकारी ने विशेष रूप से बुनकर सहकारी समितियों को सक्रिय एवं सशक्त बनाने पर जोर

दिया। उन्होंने कहा कि बांका की पारंपरिक बुनकरी, हस्तशिल्प और स्थानीय कला को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने के लिए सहकारी समितियों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। इससे स्थानीय बुनकरों और शिल्पकारों को बेहतर बाजार, रोजगार और आय के नए अवसर प्राप्त होंगे।

CSC केंद्रों की नियमित निगरानी होगी

बैठक में जिले के सभी कॉमन सर्विस सेंटर (CSC) को नियमित

एवं निर्धारित समय पर संचालित कराने का निर्देश दिया गया। डीएम ने कहा कि इन केंद्रों के माध्यम से आम नागरिकों को विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं ऑनलाइन सेवाओं का लाभ आसानी से उपलब्ध होना चाहिए। किसी भी प्रकार की लापरवाही पर संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाएगी।

चार नए जन औषधि केंद्र जल्द होंगे शुरू

स्वास्थ्य सुविधाओं को सुलभ बनाने के उद्देश्य से जिला पदाधिकारी ने प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना के अंतर्गत जिले में नए जन औषधि केंद्र खोलने की प्रक्रिया तेज करने का निर्देश दिया। उन्होंने ड्राग इंस्पेक्टर एवं संबंधित अधिकारियों को संयुक्त रूप से कार्रवाई करते हुए रजोन प्रखंड के कठचतर एवं लीलातरी, बाँसी प्रखंड के कुकुरो तथा बेलहर प्रखंड के बहोरान में लाइसेंस प्रक्रिया शीघ्र पूर्ण कर जन औषधि केंद्र प्रारंभ

कराने की निर्देश दिए।
विभिन्न विभागों ने प्रस्तुत की प्रगति रिपोर्ट
बैठक में सहकारिता विभाग की योजनाओं के साथ कृषि, पशुपालन एवं अन्य विकासात्मक कार्यक्रमों की भी समीक्षा की गई। अधिकारियों को निर्देश दिया गया कि सभी योजनाओं का लाभ समय पर पात्र लाभार्थियों तक पहुंचने और विभागों के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित किया जाए।

बैठक में उपस्थित अधिकारी

- जिला सहकारिता पदाधिकारी
- जिला अंकेक्षण पदाधिकारी
- जिला योजना पदाधिकारी
- जिला पशुपालन पदाधिकारी
- जिला कृषि पदाधिकारी
- सहित विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

एक दिन, चार छापेमारी... शराब माफियाओं पर प्रशासन का बड़ा प्रहार

बिहार पत्रिका, बांका । जिले में अवैध शराब के कारोबार को पूरी तरह समाप्त करने के उद्देश्य से मद्य निषेध विभाग ने शुक्रवार को एक साथ कई स्थानों पर व्यापक अभियान चलाया। बाराहाट, पंजवारा और बांका थाना क्षेत्रों में अलग-अलग टीमों ने गुप्त सूचना एवं वाहन जांच के आधार पर कार्रवाई करते हुए भारी मात्रा में विदेशी एवं दैसी शराब बरामद की। अभियान के दौरान चार तस्करो को गिरफ्तार किया गया, जबकि दो मामलों में आरोपी मौके से भागने में सफल रहे। विभाग ने सभी मामलों में प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। बाराहाट थाना क्षेत्र के भेंड़ा मोड़ के समीप मद्य निषेध निरीक्षक सह थानाध्यक्ष पीयूष कुमार के नेतृत्व में विशेष जांच अभियान चलाया गया। इस दौरान पंजवारा की ओर से आ रही एक लाल रंग की महिंद्रा XUV-500 को संदिग्ध स्थिति में पकड़ा गया। वाहन की तलाशी लेने पर उसमें 196.500 लीटर अवैध विदेशी शराब बरामद हुई। हालांकि वाहन चालक और तस्कर पुलिस को चकमा देकर फरार हो गए। पुलिस ने वाहन को जब्त कर अज्ञात तस्करो के विरुद्ध मामला दर्ज किया है। इसी अभियान के तहत बाराहाट थाना क्षेत्र के औरिया सड़क पर सहायक अवर निरीक्षक रंजन कुमार ने वाहन जांच के दौरान एक मोटरसाइकिल को रोका। जांच में 4 लीटर अवैध चुलाई शराब बरामद हुई। मौके से गोविंद कुमार (भागलपुर) और फंटूश कुमार (बांका) को गिरफ्तार कर बाइक सहित शराब जब्त कर ली गई। बांका थाना क्षेत्र के जितपुर पुल के पास सहायक अवर निरीक्षक नेहा कुमारी की टीम ने जांच के दौरान एक मोटरसाइकिल से 9.180 लीटर विदेशी शराब बरामद की। कार्रवाई में उगलकिशोर कुमार (दुमका) एवं विकास कुमार (बौसी, बांका) को गिरफ्तार कर न्यायिक प्रक्रिया शुरू की गई। पंजवारा थाना क्षेत्र के विक्रमपुर पुल के समीप नदी किनारे छापेमारी के दौरान मद्य निषेध टीम ने 16.125 लीटर विदेशी शराब बरामद की। पुलिस के पहुंचने से पहले तस्कर मौके से फरार हो गए। मामले की जांच जारी है। विशेष अभियान के दौरान जिले के विभिन्न क्षेत्रों से 10 लोगों को शराब सेवन के आरोप में गिरफ्तार किया गया। सभी को न्यायालय में प्रस्तुत किया गया, जहां कानूनी प्रक्रिया के तहत जमाना जमा करने के बाद उन्हें मुक्त कर दिया गया। मद्य निषेध विभाग ने स्पष्ट किया है कि जिले में अवैध शराब के निर्माण, परिवहन और बिक्री के विरुद्ध अभियान लगातार जारी रहेगा। किसी भी व्यक्ति की संलिप्तता पाए जाने पर उसके विरुद्ध कठोर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। आम नागरिकों से भी अपील की गई है कि अवैध शराब से संबंधित किसी भी सूचना को तत्काल प्रशासन के साथ साझा करें।

जनता की चौखट पर प्रशासन: डीएम ने सुनीं 17 फरियादें



बिहार पत्रिका, बांका। बिहार सरकार के सात निश्चय-3 के अंतर्गत संचालित रसका सम्मान-जीवन आसान (Ease of Living) र अभियान को धरातल पर प्रभावी बनाने की दिशा में बांका जिला प्रशासन लगातार सक्रिय है। इसी कड़ी में शुक्रवार को समाहरणालय स्थित मिनी सभागार में जिला पदाधिकारी अंशुल अग्रवाल की अध्यक्षता में साप्ताहिक जनसुनवाई का आयोजन किया गया, जहां जिले के विभिन्न क्षेत्रों से पहुंचे लोगों ने अपनी समस्याएं सीधे जिला प्रशासन के समक्ष रखीं। जनसुनवाई के दौरान कुल 17 आवेदकों ने भूमि विवाद, सरकारी योजनाओं के लाभ, राजस्व, सामाजिक सुरक्षा एवं अन्य प्रशासनिक मामलों से संबंधित आवेदन प्रस्तुत किए। जिला पदाधिकारी ने प्रत्येक मामले को गंभीरता से लेते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए तथा शिकायतों के त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निष्पादन पर विशेष बल दिया। प्रशासन की तत्परता का परिणाम यह रहा कि प्राप्त शिकायतों में से कई मामलों का निस्तारण संबंधित कार्यालयों द्वारा तत्काल कर दिया गया। जिन मामलों में विस्तृत जांच अथवा विभागीय कार्रवाई आवश्यक थी, उनके लिए संबंधित अधिकारियों को समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। जनसुनवाई केवल समाहरणालय तक सीमित नहीं रही। जिला प्रशासन के निर्देशानुसार जिले के सभी जिला स्तरीय एवं प्रखंड स्तरीय पदाधिकारी अपने-अपने कार्यालयों में निर्धारित समय पर उपस्थित रहे और आम नागरिकों की समस्याएं सुनीं। इससे लोगों को स्थानीय स्तर पर ही अपनी शिकायतें दर्ज कराने और समाधान प्राप्त करने का अवसर मिला। बैठक के दौरान जिला पदाधिकारी अंशुल अग्रवाल ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्धारित दोनों कार्यदिवसों में जनसुनवाई के दौरान कार्यालय में उनकी उपस्थिति अनिवार्य रहे। उन्होंने कहा कि किसी भी शिकायत को अनावश्यक रूप से लंबित न रखा जाए और प्रत्येक मामले का निष्पादन पारदर्शी, निष्पक्ष एवं निर्धारित समय-सीमा के भीतर किया जाए। उन्होंने कहा कि प्रशासन का मूल उद्देश्य आम नागरिकों को सरल, सुलभ, पारदर्शी एवं जवाबदेह सेवाएं उपलब्ध कराना है। यदि प्रत्येक अधिकारी अपनी जिम्मेदारी का ईमानदारी से निर्वहन करेगा, तो आमजन का प्रशासन पर विश्वास और अधिक मजबूत होगा।

बिजली विभाग की उदासीनता के कारण नगर क्षेत्र के पनिा गांव निवासी परेशान



बिहार पत्रिका, बौसी बांका। बिजली विभाग की उदासीनता के कारण पनिा गांव के बिजली उपभोक्ताओं को वर्षों से परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। जिस ओर बिजली विभाग के अधिकारी और कर्म बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। ताजा मामला शुक्रवार का है, जब नगर क्षेत्र स्थित पनिा गांव वार्ड नंबर 5 सड़क किनारे लगे पोल, जिस पोल पर एक ही 440 वोल्ट का विद्युत तार लगा हुआ है। उसी एक तार पर गांव भर के लोगों का कई कनेक्शन भी लगा हुआ है। जिसमें अचानक से आग लग गयी और बिजली का तार धू-धू कर जलने लगा और जलकर सड़क किनारे झूलने लगा। पनिा गांव के ग्रामीण महेंद्र यादव, नरेश यादव, चुन्ना मंडल, कंको देवी सहित अन्य ने बताया कि गांव में श्री फेज का कनेक्शन पुराने तार पर दे दिया गया है। जिस पर गांव के सभी उपभोक्ताओं का कनेक्शन लगा हुआ है। बताया जाता है कि महेंद्र यादव के बथान के पास लगे पोल के तार में जब आग लगी तो इस समय बथान पर कई मवेशी भी बंधा हुआ था। हालांकि मवेशियों को कोई क्षति नहीं पहुंची है। बताया जा रहा है कि महेंद्र यादव ने जान जोखिम में डालकर जलते हुए तार को अलग-अलग किया, जिसके कारण मवेशियों की जान बच पाई, अन्यथा दुर्घटना से इनकार नहीं किया जा सकता था। ग्रामीणों का कहना है कि एक फेज रहने की वजह से जल नल योजना का लाभ भी ग्रामीणों को नहीं मिल पाता है जिससे पीने वाले पानी की समस्या ग्रामीणों को बराबर होती है। ग्रामीणों का आरोप है वार्ड पार्षद पुनम देवी के साथ-साथ नगर क्षेत्र के अन्य जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों को भी इस बात से अवगत कराया गया है। बताया जाता है कि ग्रामीणों की बात ना तो जनप्रतिनिधि सुन रहे हैं और ना ही विद्युत विभाग के अधिकारी ही, ऐसे में अब इस ओर जिला स्तरीय अधिकारियों को ध्यान देना होगा, नहीं तो तीन पेज की जगह एक पेज पर लोड पड़ने के कारण कभी भी दुर्घटना घट सकती है।

जनगणना की तैयारी तेज: बांका में क्षेत्रीय कर्मियों को दिया जा रहा विशेष प्रशिक्षण

आरएमके हाई स्कूल बना प्रशिक्षण केंद्र, 28 जुलाई तक चलेगा सात दिवसीय कार्यक्रम

बिहार पत्रिका । बांका

आगामी जनगणना कार्य को त्रुटिरहित, पारदर्शी एवं समयबद्ध तरीके से संपन्न कराने के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा प्रशिक्षण अभियान को गति दी गई है। इसी क्रम में शुक्रवार को आरएमके हाई स्कूल, बांका के सभागार में जिला जनगणना हस्त पुस्तिका निर्माण एवं क्षेत्रीय कार्य से संबंधित विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण जिला प्रशासन के प्रशिक्षण कोषांग की देखरेख में आयोजित किया जा रहा है, जिसमें विभिन्न प्रखंडों के क्षेत्रीय कर्मियों एवं चार्ज पदाधिकारियों को जनगणना की प्रक्रिया, प्रपत्रों के उपयोग, डेटा संकलन और फील्ड कार्यों की विस्तृत जानकारी दी जा रही है। प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रतिदिन दो बैचों में आयोजित किया जा रहा



है, ताकि सभी कर्मियों को व्यवहारिक एवं तकनीकी जानकारी विस्तार से उपलब्ध कराई जा सके। शुक्रवार के सत्र में धौरेया एवं चांदन प्रखंड के कुल 90 क्षेत्रीय कर्मियों (45-45) के साथ दोनों प्रखंडों के चार्ज पदाधिकारियों ने

भाग लिया। राज्य स्तर से नामित प्रशिक्षकों रविन्द्र कुमार सिंह, संजय कुमार सिन्हा, विवेक प्रकाश एवं खालिद अहमद अब्बास ने प्रशिक्षण के दौरान जनगणना से जुड़े सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि



प्रत्येक आंकड़ा पूरी जिम्मेदारी एवं शुद्धता के साथ संकलित किया जाना आवश्यक है, क्योंकि यही आंकड़े भविष्य की सरकारी योजनाओं और विकास नीतियों का आधार बनते हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ नोडल पदाधिकारी

(प्रशिक्षण कोषांग) सह जिला शिक्षा पदाधिकारी देवनारायण पंडित तथा जिला सांख्यिकी पदाधिकारी पंकज कुमार की उपस्थिति में हुआ। इस दौरान प्रशिक्षण कोषांग के मास्टर ट्रेनर संतोष कुमार रजक, रविशंकर रवि एवं प्रीतम कुमार

चौधरी ने भी क्षेत्रीय कर्मियों को फील्ड स्तर पर आने वाली संभावित चुनौतियों और उनके समाधान के बारे में विस्तार से जानकारी दी। जिला प्रशासन के अनुसार यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 22 जुलाई से 28 जुलाई 2026 तक लगातार आयोजित किया जाएगा। प्रत्येक दिन अलग-अलग प्रखंडों के क्षेत्रीय कर्मियों एवं चार्ज पदाधिकारियों को प्रशिक्षित किया जाएगा, ताकि जनगणना कार्य के दौरान सभी अधिकारी एवं कर्मचारी एक समान प्रक्रिया का पालन करते हुए गुणवत्तापूर्ण कार्य कर सकें। जनगणना केवल जनसंख्या की गणना नहीं, बल्कि देश की विकास योजनाओं की आधारशिला होती है। ऐसे में क्षेत्रीय कर्मियों का प्रशिक्षण भविष्य की नीतियों के लिए विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।



थर्मल इंजीनियरिंग का नया मंत्र: क्लीन एनर्जी, सुरक्षित भविष्य



योगेश कुमार रोयल

ऊष्मीय शक्ति संयंत्र या ताप विद्युत केन्द्र के नाम से भी जाने जाने वाले थर्मल पावर स्टेशन ऐसे विद्युत उत्पादन संयंत्र होते हैं, जिनमें प्रमुख टरबाइन्स माप से चलाई जाती हैं और यह माप कोयला, गैस इत्यादि को जलाकर पानी को गर्म करके प्राप्त की जाती है।

पानी गर्म करने के लिए ईंधन का प्रयोग किया जाता है, जिससे उच्च दाब पर भाप बनती है और बिजली पैदा करने के लिए इसी भाप से टरबाइन्स चलाई जाती हैं।

थर्मल पावर स्टेशनों में ऊष्मीय ऊर्जा को बिजली में परिवर्तित किया जाता है और इसके लिए भाप से चलने वाली टरबाइन्स का इस्तेमाल किया जाता है।

कोयले नहीं, अब हरित ऊर्जा से रोशन हो भारत... थर्मल इंजीनियरिंग के महत्व और योगदान को मान्यता देने के लिए प्रतिवर्ष 24 जुलाई को 'राष्ट्रीय थर्मल इंजीनियर दिवस' मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य थर्मल इंजीनियरिंग के क्षेत्र में जागरूकता बढ़ाना और इसके महत्व को सार्वजनिक स्तर पर उजागर करना है। दरअसल थर्मल इंजीनियरिंग ऊर्जा उत्पादन, ऊर्जा प्रबंधन इत्यादि विभिन्न क्षेत्रों में उपयोगी होती है। थर्मल इंजीनियरिंग उन अवस्थाओं के अध्ययन और उपयोग को समझने में सहायक होती है, जहां ऊष्मा, ऊर्जा और उसकी व्यवस्था का विशेष महत्व होता है। थर्मल इंजीनियरिंग मैकेनिकल इंजीनियरिंग का ही एक विशेष उप-विषय है, जो ऊष्मा ऊर्जा की गति और स्थानांतरण से संबंधित है। ऊर्जा को दो माध्यमों के बीच स्थानांतरित किया जा सकता है अथवा ऊर्जा के अन्य रूपों में परिवर्तित किया जा सकता है। एक थर्मल इंजीनियर का कार्य यांत्रिक प्रणालियों का रखरखाव, निर्माण या मरम्मत करना है, जिसमें ऊर्जा के अन्य रूपों में ऊष्मा हस्तांतरण प्रक्रिया शामिल होती है। थर्मल इंजीनियर विश्लेषण करता है कि यांत्रिक ऊष्मा स्रोत विभिन्न भौतिक और औद्योगिक प्रणालियों के साथ कैसे इंटीग्रेट करते हैं। घरों तथा गाड़ियों में इस्तेमाल होने वाले एयरकंडीशनर तथा रेफ्रिजरेटर्स में थर्मल इंजीनियरिंग का इस्तेमाल होता है। थर्मल इंजीनियरिंग के जरिये इंजीनियर ऊष्मा को अलग-अलग माध्यमों में उपयोग करने के अलावा ऊष्मीय ऊर्जा को दूसरी ऊर्जा में भी परिवर्तित कर सकते हैं। थर्मल इंजीनियरिंग वास्तव में बंद या खुले वातावरण में वस्तुओं को गर्म या ठंडा रखने की प्रक्रिया है और थर्मल इंजीनियर ऊष्मीय ऊर्जा को केमिकल, मैकेनिकल या विद्युतीय ऊर्जा में परिवर्तित करने के लिए विभिन्न प्रकार की मशीनें तैयार करते हैं, जिनके जरिये वे ऊष्मा को नियंत्रित करते हैं। हमारे घरों या दफ्तरों में इस्तेमाल होने वाली बिजली इसी ऊष्मीय ऊर्जा से बनती है और यह बिजली बनाने का काम करते हैं थर्मल पावर स्टेशन।

ऊष्मीय शक्ति संयंत्र या ताप विद्युत केन्द्र के नाम से भी जाने जाने वाले थर्मल पावर स्टेशन ऐसे विद्युत उत्पादन संयंत्र होते हैं, जिनमें प्रमुख टरबाइन्स भाप से चलाई जाती हैं और यह भाप कोयला, गैस इत्यादि को जलाकर पानी को गर्म करके प्राप्त की जाती है। पानी गर्म करने के लिए ईंधन का प्रयोग किया जाता है, जिससे उच्च दाब पर भाप बनती है



और बिजली पैदा करने के लिए इसी भाप से टरबाइन्स चलाई जाती हैं। थर्मल पावर स्टेशनों में ऊष्मीय ऊर्जा को बिजली में परिवर्तित किया जाता है और इसके लिए भाप से चलने वाली टरबाइन्स का इस्तेमाल किया जाता है। भाप बनाने के लिए पानी को उच्च तापमान पर गर्म किया जाता है, जिसके लिए कोयला, सोलर हीट, न्यूक्लियर हीट, कचरा तथा बायो ईंधन उपयोग किया जाता है। दुनिया के कई देशों में अभी भी बिजली पैदा करने के लिए भाप से चलने वाली टरबाइन्स का उपयोग किया जाता है किन्तु पर्यावरणीय खतरों को देखते हुए अब धीरे-धीरे बिजली पैदा करने के लिए सौर ऊर्जा तथा पवन ऊर्जा जैसे अक्षय ऊर्जा के अन्य स्रोतों को ही महत्व दिया जाने लगा है। भारत में इस दिशा में तेजी से कदम बढ़ाए जा रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में हजारों मेगावाट क्षमता की कुछ अत्याधुनिक मेगा सौर ऊर्जा परियोजनाएं शुरू भी की गई हैं। हजारों मेगावाट के कुछ सोलर प्लांट पहले से ही ऊर्जा उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान दे भी रहे हैं। दरअसल थर्मल पावर स्टेशनों में भाप पैदा करने के लिए कोयला जलाने से पर्यावरण को अपूरणीय क्षति पहुंचती है क्योंकि इस प्रक्रिया

में निकलने वाली हानिकारक गैसों हवा में मिलकर पर्यावरण को बुरी तरह प्रदूषित करती हैं, साथ ही कोयला या अपशिष्ट जलाने के बाद बचने वाले अवशेषों के निबटारे की भी बड़ी चुनौती मौजूद रहती है। हालांकि भारत में थर्मल पावर स्टेशनों में बिजली पैदा करने के लिए कोयले के अलावा ऊर्जा के अन्य स्रोतों का भी इस्तेमाल किया जाता है किन्तु अधिकांश बिजली कोयले के इस्तेमाल से ही पैदा होती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार कोयले को जलाया जाना और इससे होने वाली गर्मी, पारे के प्रदूषण का मुख्य कारण है। विश्वभर में करीब चालीस फीसदी बिजली कोयले से प्राप्त होती है जबकि भारत में करीब साठ फीसदी बिजली कोयले से, सोलर फीसदी अक्षय ऊर्जा के विभिन्न स्रोतों जैसे सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा बायो गैस से, चौदह फीसदी पानी से, आठ फीसदी गैस से, 1.8 फीसदी न्यूक्लियर ऊर्जा से तथा 0.3 फीसदी डीजल से पैदा होती है। वैसे बिजली पैदा करने के लिए भले ही ऊर्जा के किसी भी स्रोत का इस्तेमाल किया जाए, प्रत्येक थर्मल पावर प्लांट में इसके लिए बॉयलर का इस्तेमाल होता है, जिसमें ईंधन को जलाकर ऊष्मीय ऊर्जा

पैदा की जाती है, जिससे पानी को गर्म कर भाप बनाई जाती है, जो टरबाइन्स को चलाने में इस्तेमाल होती है। वायु प्रदूषण आज दुनियाभर में एक बड़े स्वास्थ्य संकट के रूप में उभर रहा है और इस समस्या के लिए थर्मल पावर प्लांटों से निकलने वाला उत्सर्जन भी एक बड़ा कारण है। इस समस्या से निपटने के लिए एक दशक से भी अधिक समय से उत्सर्जन मानकों को पूरा करने और नए कोयला आधारित बिजली संयंत्रों को रोककर अक्षय ऊर्जा की तरफ कदम बढ़ाने की जरूरत पर जोर दिया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट भी इन उत्सर्जन मानकों को पूरा करने के लिए समय सीमा निर्धारित करता रहा है किन्तु थर्मल पावर प्लांटों को प्रदूषण के लिए उत्तरदायी बनाए और अक्षय ऊर्जा के लक्ष्य को हासिल करने के लिए नए थर्मल पावर प्लांटों का निर्माण रोका जाए। माना जा रहा है कि उत्सर्जन मानकों का पालन करने में देरी के चलते सालभर में 70 हजार से ज्यादा मौतें समय पूर्व हो रही हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्यरत संस्था ग्रीनपीस के अनुसार यदि उत्सर्जन मानकों को समय से लागू किया जाता तो सल्फर डाईऑक्साइड में 48 फीसदी, नाइट्रोडन डाई ऑक्साइड में 48 फीसदी और पीएम उत्सर्जन में 40 फीसदी तक की कमी की जा सकती थी, जिससे समय पूर्व हो रही इन मौतों से बचा जा सकता था। थर्मल पावर प्लांटों में बिजली बनाए जाने के लिए कोयला जलाने के दौरान उससे बनी राख का 10 फीसदी से भी अधिक हिस्सा चिमनियों के जरिये धुएं के साथ ही वातावरण में घुल जाता है, जो गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं का कारण बनता है। बहरहाल, आज जिस प्रकार दुनियाभर में पर्यावरणीय खतरों के भेदनजर थर्मल पावर प्लांटों में कोयले के इस्तेमाल पर रोक लगाते हुए सौर ऊर्जा तथा पवन ऊर्जा जैसे अक्षय ऊर्जा के महत्वपूर्ण स्रोतों का उपयोग किया जा रहा है, ऐसे में भारत को भी कोयला आधारित थर्मल पावर प्लांट के बजाय क्लीन और ग्रीन एनर्जी को प्रोत्साहन देना चाहिए। समय के साथ अब जलविद्युत इसी बात की है कि हम अक्षय ऊर्जा की ओर तेजी से कदम बढ़ाएं और बिजली बनाने के लिए चरणबद्ध तरीके से ऊर्जा के इन्हीं सुरक्षित स्रोतों के इस्तेमाल को बढ़ावा दें।

संपादकीय

गह्यता भूजल संकट

यह आंकड़ा डराने वाला है कि उत्तर भारत में भूजल का स्तर 450 घन किलोमीटर तक घट गया है। पिछले दो दशकों में आई यह गिरावट इस बात का संकेत है कि आने वाले समय में खेती व जीवनयापन के लिए पानी की किल्लत हो सकती है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर में सविल इंजीनियरिंग और पृथ्वी विज्ञान के ह्यक्रिम साराभाई चेयर प्रोफेसरह्व के एक अध्ययन में बताया गया है कि दो दशक में भूजल में आयी यह कमी भारत के सबसे बड़े जलाशय इंदिरा सागर बांध की कुल जल भंडारण मात्रा का 37 गुना है। दरअसल, भूजल में इस कमी की एक बड़ी वजह वर्ष 1951 से 2021 के बीच मानसूनी बारिश में 8.5 फीसदी की कमी आना है। इस संकट का दूसरा पहलू यह भी है कि उत्तर भारत में सर्दियों के तापमान में 0.3 सेल्सियस वृद्धि देखी गई है। इस बात की पुष्टि हैदराबाद स्थित राष्ट्रीय भूभौतिकी अनुसंधान संस्थान के शोधार्थियों के एक दल ने की है। मानसून के दौरान कम बारिश होने और सर्दियों के दौरान तापमान बढ़ने के कारण आने वाले वर्षों में निश्चित रूप से सिंचाई के लिये पानी की मांग में वृद्धि होगी। वहीं पानी की मांग बढ़ने से भूजल पुनर्भरण में भी कमी आएगी। जिसका दबाव पहले से ही भूजल के संकट से जड़ रहे उत्तर भारत के इलाके पर पड़ेगा। हैदराबाद स्थित एनजीआरआई का अध्ययन चेताता है कि जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से जहां एक ओर मानसून में दौरान बारिश में कमी आएगी, वहीं सर्दियों में अपेक्षाकृत अधिक तापमान रहने से भूजल पुनर्भरण में छह से 12 फीसदी तक की कमी आ सकती है। संकट का एक पहलू यह भी है कि हाल के वर्षों में मिट्टी में नमी में कमी देखी गई है। जिसका निष्कर्ष यह भी है कि आने वाले वर्षों में सिंचाई के लिये पानी की मांग में वृद्धि होगी। निश्चित ही यह स्थिति हमारी खेती और खाद्य श्रृंखला की सुरक्षा के लिये चिंताजनक कही जा सकती है। वहीं दूसरी ओर शोधार्थियों ने अपने अध्ययन में पाया है कि मानसून के दौरान बारिश के प्रतिशत में गिरावट तथा सर्दियों में तुलनात्मक रूप से मौसम के गर्म होने से फसलों की सिंचाई के लिये अधिक भूजल की जरूरत पड़ेगी। इसकी वजह यह भी है कि सर्दियों में तापमान अधिक होने से खेतों की मिट्टी तुलनात्मक रूप से शुष्क हो जाती है। यह कमी तभी पूरी हो सकती है जब हल्की बारिश की अवधि अधिक हो। देश के नीति-निर्णयताओं को गंभीरता से विचार करने की जरूरत है कि भूजल के स्तर को कैसे ऊंचा रखा जा सके। जहां एक ओर वर्षा जल संग्रहण को प्रामोण्य व शहरी इलाकों में युद्धस्तर पर शुरू करने की जरूरत है, वहीं अधिक पानी वाली फसलों के चक्र में बदलाव लाने की भी आवश्यकता है। इस संकट के आलोक में खेतियार वर्ग को मुफ्त बिजली-पानी की राजनीति पर पुनर्विचार की जरूरत भी है। भूजल की सहज व सस्ती उपलब्धता उसके अधिक उपयोग को प्रेरित करती है। कृषि वैज्ञानिकों को ऐसी फसलों के लिये अनुसंधान को बढ़ावा देना होगा, जो ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों के बावजूद अधिकतामान व कम पानी में अधिक उपज दे सके। सरकारों को यह नहीं भूलना चाहिए कि 140 करोड़ लोगों के लिये खाद्यान्न उपलब्ध कराना उनका प्राथमिक दायित्व है। खाद्यान्न के उत्पादन में कमी

चिंतन-मनन

उपाय भी ठीक से हो

एक सास ने बहू से कहा, बहूरानी! मैं अभी बाहर जा रही हूं। एक बात का ध्यान रहे, घर में अंधेरा न घुसने पाए। बहू बहुत भोली थी। सास चली गई, सांझ होने को आई। उसने सोचा कि अंधेरा कहीं घुस न जाए, सारे दरवाजे बंद कर दिए। सब खिड़कियां बंद कर दीं। दरवाजे के पास लाठी लेकर बैठ गई। सोचा- दरवाजा खुला नहीं है, कोई खिड़की खुली है, कहीं भी कोई छेद नहीं। आपणा तो दरवाजा खटखटाना, लाठी लिए बैठी हूं, देखती हूं कैसे अन्दर आएगा। पूरी व्यवस्था कर दी। अंधेरा गहराने लगा। सोचा, कहाँ से आ गया! कहीं भी तो कोई रास्ता नहीं है। हो न हो दरवाजे से ही आ रहा है। अन्धकार को पीटना शुरू कर दिया। काफी पीटा कि निकल जाओ मेरे घर से! मेरी सास की मनाही है कि तुम्हें भीतर घुसना नहीं है! खूब लाटियां बजाई। लाठी टूटने लगी। हाथ छिल गए। लहलुहान हो गए। अंधेरा तो नहीं गया। परेशान हो गई।

सास आई। दरवाजा खोला। कहा, यह क्या किया? मैंने कहा था कि अंधेरे की मत आने देना घर में! वह बोली, देखो, मेरे हाथ देख लो। लहलुहान हो गए। लाठी टूट गई। मैंने बहुत समझाया, बहुत रोका, पर इतना जिद्दी है कि माना ही नहीं और यह तो घुस ही गया। सास ने सिर पर हाथ रखा। कहा, बहूरानी! अंधेरे को ऐसे मिटाया जाता है? क्या अंधेरा ऐसे मिटता है? समझी नहीं तुम बात को। सास ने दीया जलाया, अंधेरा समाप्त हो गया। उपाय के बारे में हमारी जानकारी सही नहीं होती तो हम प्रयत्न तो करते हैं, परिश्रम करते हैं, पर अंधेरा मिटता नहीं।



दिलीप कुमार पाठक

आज देश का युवा और छात्र वर्ग गहरे संकट में है। जब भी इतिहास में बड़े बदलाव हुए हैं, उनकी शुरुआत हमेशा कॉलेजों से ही हुई है। छात्र देश का भविष्य होते हैं, कोई अपराधी नहीं। लेकिन आज जब देश का छात्र अपनी पढ़ाई, परीक्षाओं में धांधली या रोजगार की मांग लेकर सड़कों पर उतरता है, तो उसके साथ अपराधियों जैसा व्यवहार किया जाता है। एक तरफ सरकार उनकी जायज मांगों को सुनने से मना कर देती है, तो दूसरी तरफ उन पर पुलिस की लाटियां और ऑसू गैस के गोले छोड़े जाते हैं। सरकार बातचीत के बजाय दमन का रास्ता चुन रही है। जब रक्षक ही भक्षक बन जाए, तो जनता आखिर कहाँ जाए? एक सच्चे लोकतंत्र की खूबी यह होती है कि वहाँ विरोध प्रदर्शनों का सम्मान किया जाता है। सरकार का कर्तव्य है कि वह प्रदर्शनकारी छात्रों को बुलाए, उनकी समस्याओं को समझे और मिलकर रास्ता निकाले। लेकिन मौजूदा समय में संवाद की जगह पूरी तरह खत्म हो चुकी है। सत्ता में बैठे लोग इतने अहंकारी हो चुके हैं कि उन्हें जनता की आवाज सिर्फ एक शोर



सुनील कुमार महला

हाल ही में सिक्किम के समरडुंग, नामची जिले में एनएचपीसी की तौस्ता स्टेशन-एक जलविद्युत परियोजना के निर्माणधीन-एक (एडीआईटी-3) में हादसा हो गया। मीडिया में उपलब्ध जानकारी के अनुसार 20 जुलाई 2026 को निर्माणधीन सुरंग के अंदर अचानक मीथेन गैस से जुड़ी घटना (संभावित विस्फोट/दहन) हुई और इसके बाद सुरंग के प्रवेश मार्ग के पास भूस्खलन हुआ, जिससे सुरंग का हिस्सा बंद हो गया और अंदर मौजूद कर्मचारी व अधिकारी फंस गए। बताया जा रहा है कि सुरंग में 40 से अधिक लोग मौजूद थे। इनमें से कुछ लोग समय रहते बाहर निकल आए, लेकिन लगभग 25झट्ट लोग अंदर फंस गए। जानकारी अनुसार इनमें एनएचपीसी, टेकदार कंपनी और मजदूर शामिल थे। ताजा उपलब्ध जानकारी के अनुसार (यह आलेख लिखे जाने तक) 20 लोगों के शव बरामद किए जा चुके हैं तथा 2 लोग सुरक्षित बाहर निकलने में सफल रहे तथा रिपोर्ट में समय तक 5 लोगों की तलाश जारी थी। प्रारंभिक जांच में मना जा रहा है कि सुरंग में प्राकृतिक रूप से जमा मीथेन गैस को निकालने के प्रयास के दौरान विस्फोट/दहन हुआ, जिससे भूस्खलन हुआ और सुरंग का प्रवेश मार्ग बंद हो गया। हालाँकि, आँसुम कारण विस्तृत जांच के बाद ही स्पष्ट हो सकेगा। राहत एवं बचाव कार्य में राज्य पुलिस, एसडीआरएफ, एनडीआरएफ, सेना, आईटीबीपी,



लगी है। जब युवाओं से शांतिपूर्ण ढंग से अपनी बात रखने का अधिकार भी छीन लिया जाए, तो लोकतंत्र का मूल ढांचा ही खतरे में पड़ जाता है। छात्रों पर झूठे मुकदमे दर्ज करना और उनके भविष्य को बर्बाद करना किसी भी लोकतांत्रिक देश की पहचान नहीं हो सकती। जब कार्यपालिका यानी सरकार पूरी तरह बहरी और अंधी हो जाती है, तो देश का आम नागरिक न्याय की आखिरी उम्मीद लेकर न्यायपालिका का दरवाजा खटखटाता है। भारत में सुप्रीम कोर्ट को संविधान का रक्षक और जनता का सबसे बड़ा कवच माना गया है। हर पीड़ित व्यक्ति को यह विश्वास होता है कि भले ही पूरी दुनिया उसका साथ छोड़ दे, लेकिन देश की सबसे

बड़ी अदालत उसे न्याय जरूर देगी। लेकिन जब इसी अदालत से यह सुनने को मिले कि हमारे पास समय नहीं है या हम इस मामले की सुनवाई नहीं कर सकते और न ही वीडियो देख सकते हैं हमारा वक्त बर्बाद न करें, तो देश के युवाओं का भरोसा पूरी तरह टूट जाता है। यह सिर्फ एक अदालती टिप्पणी नहीं है, बल्कि यह उस करोड़ों युवाओं की उम्मीदों पर बहुत गहरी चोट है जो दिन-रात मेहनत करके देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं। अगर देश के सर्वोच्च न्यायालय के पास युवाओं पर हो रहे अत्याचारों को देखने का समय नहीं होगा, तो फिर इस देश में न्याय की क्या परिभाषा रह जाएगी? अदालतें तकनीकी कारणों का हवाला देकर इतने गंभीर

सिक्किम हादसा: प्रकृति की चेतावनी या मानवीय लापरवाही?



दमकल तथा अन्य विशेषज्ञ एंजिनियरों को लगाया गया। इधर, मुख्यमंत्री प्रेम सिंह तमांग और राज्यपाल ओम प्रकाश माथुर ने भी घटनास्थल का दौरा कर स्थिति की समीक्षा की है। बहरहाल, यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि भूस्खलन के कारण इस सुरंग के ढह जाने से कई लोगों की मौत हो जाने की घटना ने पर्यावरण संरक्षण और सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। पहाड़ों की पारिस्थितिकी की अनदेखी कर विकास कितना नुकसानदेह हो सकता है, यह अब कोई छिपी बात नहीं है। हाल फिलहाल, यहाँ पाठकों को बताता चल्चु कि हमारे देश में भूस्खलन (लैंडस्लाइड) एक गंभीर प्राकृतिक आपदा बनता जा रहा है। मानसून के दौरान हिमालयी और पश्चिमी घाट के राज्यों में इसकी घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। हाल के दिनों में सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और पूर्वोत्तर भारत में भारी वर्षा के कारण कई बड़े भूस्खलन हुए हैं। वास्तव में,अत्यधिक वर्षा और बाढ़ फटना, भारत के हिमालयी क्षेत्र का भूकंपीय दृष्टि से अत्यधिक सक्रिय होना, अनियोजित विकास (पेड़ों की अंधाधुंध कटाई,सड़क, सुरंग, जलविद्युत परियोजनाओं और

भवन निर्माण के दौरान वैज्ञानिक मानकों की अनदेखी), विकास के नाम पर पहाड़ों का काटा जाना, जलवायु परिवर्तन (अत्यधिक और अल्प अवधि की वर्षा) भूस्खलन के प्रमुख कारणों में से एक हैं तथा जम्मू-कश्मीर, लाद्वाख, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, दार्जिलिंग (पश्चिम बंगाल) तथा पश्चिमी घाट (केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र) हमारे देश में सबसे अधिक भूस्खलन प्रभावित क्षेत्रों में से एक हैं। गौरतलब है कि भारत का लगभग 12.6% भौगोलिक क्षेत्र भूस्खलन के खतरे वाले क्षेत्र में आता है तथा इस क्रम में इसरो (राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र) ने वर्ष 1998-2022 के दौरान भारत में लगभग 80,000 भूस्खलनों का डेटाबेस तैयार किया है। यहाँ पाठकों को यह भी बताता चल्चु कि राष्ट्रीय सुदूर संवेदन केंद्र, इसरो का एक प्रमुख केंद्र है, जिसका मुख्यालय हैदराबाद, तेलंगाना में स्थित है। बहरहाल, भूस्खलन का यह हमारे देश में पहला हादसा नहीं है। उत्तराखंड और तेलंगाना में भी ऐसे हादसे हो चुके हैं, लेकिन उनसे कोई सबक नहीं लिया

और संवेदनशील मामलों से पल्ला नहीं झाड़ सकते।। जब सड़कों पर छात्रों का खून बह रहा हो और पुलिस बबरता के वीडियो सामने आ रहे हों, तब अदालत का यह कहना कि हमारे पास समय नहीं है, न्याय व्यवस्था पर सवालिया निशान खड़ा करता है। अब सवाल यह उठता है कि अगर सरकारें दमन करेंगी और अदालतें व्यस्तता का बहाना बनाएंगी, तो फिर यह कैसा लोकतंत्र है? लोकतंत्र सिर्फ पांच साल में एक बार वोट देने का नाम नहीं है। लोकतंत्र एक जीवित व्यवस्था है, जो हर दिन नागरिकों के अधिकारों की रक्षा करने से चलती है। अगर नागरिकों को अपनी बात कहने का हक नहीं है, और न्याय मांगने पर उन्हें सिर्फ निराशा मिलती है, तो यह लोकतंत्र केवल कागज़ों पर ही ज़िंदा रहेगा। ऐसी स्थिति देश को तानाशाही की तरफ धकेलती है। इस गंभीर संकट से निकलने का रास्ता संवाद ही है। सरकार को अपना अहंकार छोड़कर प्रदर्शनकारी छात्रों के साथ बैठकर उनकी समस्याओं का समाधान निकालना चाहिए। इसके साथ ही, देश की अदालतों को भी अपनी प्राथमिकताओं को दोबारा तय करना होगा। देश के युवाओं के मानवाधिकारों की रक्षा करना सबसे ज्यादा जरूरी है। जब तक सरकार लाटियां चलाना बंद नहीं करेगी और अदालतें अपनी आंखें नहीं खोलेगी, तब तक लोकतंत्र की आत्मा तड़पती रहेगी। हमें हर हाल में इस भरोसे को बचाना होगा, क्योंकि भरोसे के बिना कोई भी देश मजबूत नहीं बन सकता। (लेखक पत्रकार हैं) (यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)



राघव जुयाल संग डेटिंग की अफवाहों पर शहनाज गिल ने तोड़ी चुप्पी

हाल ही में शहनाज गिल और राघव जुयाल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुआ था, जिसके बाद दोनों के अफेयर की चर्चाएं तेज हो गई थीं। अब शहनाज ने इन अफवाहों पर अपनी प्रतिक्रिया दी है।

एक इंटरव्यू के दौरान जब शहनाज से राघव जुयाल के साथ उनके रिश्ते को लेकर सवाल पूछा गया, तो उन्होंने अपनी निजी जिंदगी पर बात करने से साफ मना कर दिया। उन्होंने कहा, 'प्लीज मुझसे पर्सनल सवाल मत पूछिए।' शहनाज ने राघव को अपना बेहद करीबी और अच्छा दोस्त बताया। उन्होंने अफेयर की खबरों पर ध्यान न देते हुए बातचीत का रुख राघव के काम की तरफ मोड़ दिया।

फैंस से की फिल्म देखने की अपील

शहनाज ने राघव की आने वाली फिल्म 'भाई तेरा स्टार है' को सपोर्ट करने की अपील की है। उन्होंने राघव की तारीफ करते हुए कहा, राघव पहली बार किसी फिल्म में बतौर मुख्य अभिनेता नजर आने वाले हैं। उनका कोई फिल्मी बैकग्राउंड नहीं है, उन्होंने आज जो भी मुकाम हासिल किया है वह सिर्फ अपनी मेहनत और टैलेंट के दम पर किया है। इसलिए, सभी लोग सिनेमाघरों में जाकर उनकी फिल्म 'भाई तेरा स्टार है' को जरूर देखें और उन्हें पूरा सपोर्ट करें।

कब रिलीज होगी 'भाई तेरा स्टार है'

फिल्म 'भाई तेरा स्टार है' दुनिया भर के सिनेमाघरों में 30 जुलाई 2026 को रिलीज होगी। इस फिल्म का निर्देशन विवेक बी. अग्रवाल ने किया है। यह एक कॉमेडी फिल्म है। इस फिल्म में राघव जुयाल मुख्य भूमिका (अजय सिंह) में नजर आएंगे, साथ ही संजय कपूर और निहारिका एनएम भी प्रमुख किरदारों में हैं।

दर्शकों से मिले प्यार, खुशी और सम्मान के लिए मेरे पास शब्द नहीं है

अभिनेत्री संजीदा शेख इन दिनों अपनी फिल्म 'धमाल-4' और 'इक्का' की रिलीज का लुफ्त उठा रही हैं। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए बताया कि उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि अलग-अलग समय पर बनी फिल्मों एक ही दिन रिलीज हो जाएंगी। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो पोस्ट किया, जिसमें उन्होंने इस खास पल को अनोखा बताया।

अभिनेत्री संजीदा शेख ने लिखा, किस्मत भी कभी-कभी बहुत खूबसूरत तरीके से चीजों को जोड़ देती है। अलग-अलग समय पर शूट की गई 'धमाल 4' और 'इक्का' एक ही दिन रिलीज होगी, ऐसा मैंने कभी नहीं सोचा था। अभी भी इस एहसास को महसूस कर रही हूँ। दर्शकों द्वारा मिले प्यार, खुशी और सम्मान के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं। मैं अभी इस प्यार को पूरी तरह महसूस करने की

कोशिश कर रही हूँ। आप सभी के प्यार और हौसला बढ़ाने के लिए दिल से धन्यवाद। आपका प्यार मुझे और बेहतर काम करने की प्रेरणा देता है। शुक्रिया। फिल्म 'धमाल-4' में संजीदा शेख अहम भूमिका में नजर आ रही हैं। फिल्म में वह अरशद वारसी (आदि) और जावेद जाफरी (मानव) की जोड़ी वाली तीसरी टोली का हिस्सा हैं, जहां वह 'भाभी' (आदि की पत्नी) का किरदार निभा रही हैं।

इंद्र कुमार के डायरेक्शन में बनी इस फिल्म में अजय देवगन, रितेश देशमुख, रवि किशन, संजय मिश्रा, उपेंद्र लिमये, अंजलि आनंद और ईशा गुप्ता जैसे कलाकार नजर आ रहे हैं। नेटफिलक्स की फिल्म 'इक्का' एक हाई स्टैक्स लीगल थ्रिलर में संजीदा शेख ने 'गौरी' (शौर्यमान की पत्नी) की भूमिका निभाई है। फिल्म में उनके किरदार को कहानी के अनुसार अहम, लेकिन सीमित स्क्रीन स्पेस वाला बताया गया है। 'धमाल-4' और 'इक्का' दोनों ही फिल्में 10 जुलाई को दुनियाभर में रिलीज हुईं। कॉमेडी ड्रामा थिएटर में आई, जबकि एक्शन थ्रिलर का प्रीमियर ओटीटी प्लेटफॉर्म नेटफिलक्स पर हुआ।

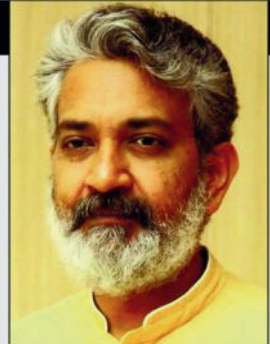
प्रियंका चोपड़ा ने की राजामौली की तारीफ

ग्लोबल स्टार प्रियंका चोपड़ा जल्द ही फिल्म 'वाराणसी' में नजर आने वाली हैं। इस फिल्म का निर्देशन एसएस राजामौली कर रहे हैं। प्रियंका ने उनकी जमकर तारीफ की है। इस फिल्म के साथ प्रियंका भारतीय सिनेमा में वापसी कर रही हैं। यह फिल्म अगले साल अप्रैल में सिनेमाघरों में रिलीज होगी। हाल ही में एक्ट्रेस ने राजामौली के साथ काम करने के अनुभव के बारे में बात की। बातचीत में प्रियंका ने कहा 'मैं इस पर (वाराणसी) लगभग 14 महीनों से काम कर रही हूँ। एसएस राजामौली फिल्में बनाने में ज्यादा समय लेने के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने मुझे इस फिल्म के लिए बुलाया और यह दुनिया भर और समय के साथ एक जबरदस्त एडवेंचर है। इसमें थोड़ा समय लगा है लेकिन मैं इसे लेकर बहुत उत्साहित हूँ। मैं इसमें कई शानदार स्लॉ-

मोशन जंप करती हूँ।' हाल ही में वैयायटी से बातचीत में प्रियंका ने कहा 'यह उन सभी फिल्मों से अलग है, जो मैंने अब तक की हैं। हम अंटार्कटिका की यात्रा करते हैं। राजामौली जो दुनिया बनाते हैं वह बहुत भव्य होती हैं। किसी के पास भी वैसा विजन नहीं है, जैसा राजामौली के पास है। इसलिए मैं भी और देखने के लिए उत्साहित हूँ।' प्रियंका ने बताया कि फिल्म साइन करने से पहले उन्होंने निर्देशक से क्या कहा था। उन्होंने कहा 'मैंने कहा, 'सुनिश्चित, मैं इंडियन फिल्मों में वापस आ रही हूँ। मुझे एक डॉस सोनिंग करना है। मतलब आपको मुझसे डॉस करवाना ही होगा।'

2027 में रिलीज होगी है फिल्म

राजामौली ने हाल ही में बताया कि फिल्म के मुख्य एक्शन सीन पहले ही पूरे हो चुके हैं और अवतार तक शूटिंग पूरी होने की उम्मीद है। यह फिल्म अप्रैल 2027 में सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इसमें प्रियंका चोपड़ा के साथ महेश बाबू और पृथ्वीराज सुकुमारन अहम किरदार में होंगे।



मैंने हमेशा ऐसी फिल्मों का समर्थन किया है जिनमें महिलाओं का किरदार प्रभावशाली हो

बॉलीवुड के दिग्गज अभिनेता अनिल कपूर का कहना है कि उन्होंने अपने पूरे फिल्मी करियर में हमेशा ऐसी फिल्मों का समर्थन किया है, जिनमें महिलाओं के मजबूत और प्रभावशाली किरदार कहानी का केंद्र हों। उनका मानना है कि सिनेमा में महिलाओं की दमदार आवाज और उनकी अहम भूमिका को और अधिक जगह मिलनी चाहिए। अनिल कपूर ने इंस्टाग्राम पर लिखा कि उनका यह विश्वास सिर्फ फिल्मों तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके निजी जीवन की मजबूत महिलाओं ने भी उनकी इस सोच को और मजबूत बनाया है। अभिनेता अनिल कपूर ने लिखा, 'मैं हमेशा से मानता आया हूँ कि हमें ऐसी फिल्मों की जरूरत है, जिनमें मजबूत महिला मुख्य किरदार और उनकी आवाज हो। चाहे वर्षों पहले 'जुदाई' और 'लम्हे' जैसी फिल्मों में अभिनय करना हो या 'खूबसूरत', 'वीरे दी वैडिंग' और 'कू' जैसी फिल्मों का निर्माण करना, मैंने हमेशा ऐसी महिला किरदारों का समर्थन किया है जो कहानी की धुरी हों। 'उन्होंने अपनी बेटियाँ सोनम कपूर और रिया कपूर के साथ-साथ अपनी पत्नी को भी अपनी इस सोच की प्रेरणा बताया।



सही मौके पर सही जगह होने के चलते मिला करियर का सबसे लोकप्रिय किरदार

अभिनेत्री रसिका दुग्गल ने अपने अलग तरह के किरदारों से इंडस्ट्री में अपनी अलग पहचान बनाई है। हालांकि, उन्हें पहचान 'मिर्जापुर' सीरीज के उनके 'बीना त्रिपाठी' के किरदार से ही मिली। अब 'मिर्जापुर' फिल्म के तौर पर बड़े पर्दे पर आ रही है। इसमें एक बार फिर रसिका बीना त्रिपाठी के किरदार में नजर आएंगी। लेकिन हाल ही में रसिका ने बताया कि बीना का किरदार उन्हें किस्मत से मिल गया। सही मौके पर सही जगह होने के चलते उन्हें अपने करियर का सबसे लोकप्रिय किरदार मिला।

बातचीत में रसिका दुग्गल ने 'मिर्जापुर' के अपने किरदार के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि 'मिर्जापुर' लगभग नहीं हो पाता। हालांकि वह इसके क्रिएटर करण अशुमन को जानती थी, लेकिन उनसे काम मांगने में उन्हें हिचकिचाहट हो रही थी। एक्ट्रेस ने कहा कि मिर्जापुर के लिए मैं करण अशुमन को जानती थी, जो सीजन 1 के क्रिएटर और डायरेक्टर

में से एक थे। किसी ने मुझे बताया कि वह यह शो बना रहे हैं। मैंने कहा, 'अगर करण मुझे कास्ट करना चाहते, तो वह मुझे बुलाते।' मेरी दोस्त ने कहा, 'तुम उन्हें याद दिलाने के लिए एक मैसेज क्यों नहीं भेजती?' मैंने कहा, 'मैं उनके लिए स्थिति अजीब नहीं बनाना चाहती। दोस्तों का मैसेज आना कि 'रोल दे दो,' ऐसी स्थिति है जिससे आप आसानी से निकल नहीं सकते।' लेकिन फिर मैंने कहा ठीक है, मैं उन्हें मैसेज करूंगी।

किरदार को लेकर नर्वस थीं

उस फैसले ने सब कुछ बदल दिया। रसिका ने आगे कहा कि मुझे एक मिनट के अंदर ही जवाब मिला, 'बिल्कुल, चलो इस बारे में मिलते हैं।' जब मैं उनसे मिली, तो उन्होंने कहा, 'मैंने तुमसे इसलिए नहीं पूछा क्योंकि तुम 'मंटो' में नवाज के अपोजिट कास्ट हुई थीं। मुझे लगा कि शायद तुम स्ट्रीमिंग शो नहीं करना चाहती। शायद तुम सिर्फ फिल्में

करना चाहती हो।' मैंने कहा, 'क्या आप पागल हैं? बिल्कुल, मैं यह जरूर करूंगी।' जब मैंने वह हिस्सा पढ़ा, तो मुझे लगा, 'वाह, शुक्रिया।' मैं लगभग डर ही गई थी।

किस्मत से मिला 'दिल्ली क्राइम' में रोल

एक्ट्रेस ने 'दिल्ली क्राइम' में अपनी कास्टिंग को लेकर भी बताया। उन्होंने बताया कि कैसे किस्मत से उन्हें यह रोल मिला। एक्ट्रेस ने कहा कि इसी तरह 'दिल्ली क्राइम' के मामले में भी सही समय पर सही जगह पर आपका काम आया। मैं 'मेड इन हेवन' की शूटिंग कर रही थी, जिसमें मेरा छोटा सा रोल था। मैं रीची मेहता को जानती थी क्योंकि हम फिल्म फेस्टिवल में मिल चुके थे, जब मैं 'किस्सा' के साथ टैवल कर रही थी। लेकिन मुझे नहीं पता था कि वह कुछ नया बना रहे हैं और मैंने उनसे संपर्क भी नहीं किया था। इतेफाक से रीची उसी लोकेशन पर आए जहां हम 'मेड इन हेवन' की शूटिंग कर रहे थे, ताकि वह अपने किसी दूसरे शो के लिए लोकेशन का जायजा कर सकें। मजेदार बात यह है कि वह शो तो नहीं बना, लेकिन 'दिल्ली क्राइम' बन गया। उन्होंने सोचा, 'अरे, मैं अभी रसिका से मिला। वह इस रोल के लिए बहुत अच्छी रहेगी।' एक्ट्रेस का मानना है कि टैलेंट इस पूरी प्रक्रिया का बस एक हिस्सा है। उन्होंने कहा कि यह किस्मत की बात है। सही जगह, सही समय। यह सब उसी पर निर्भर करता है।



हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में लोग सपोर्ट नहीं करते

अभिनेत्री रकुल प्रीत सिंह कई तेलुगु और हिंदी फिल्मों में काम कर चुकी हैं। हाल ही में उन्होंने दोनों इंडस्ट्रीज में काम करने के माहौल के बारे में बात की। उन्होंने बताया कि उन्हें लगता है कि टॉलीवुड में लोग एक बड़े परिवार की तरह काम करते हैं, जबकि बॉलीवुड में माहौल अलग होता है।

रकुल प्रीत सिंह ने हाल ही में बताया कि तेलुगु इंडस्ट्री ने हमेशा उनका गर्मजोशी से स्वागत किया है और सपोर्ट किया है। रकुल के मुताबिक, वहां के एक्टर, डायरेक्टर और प्रोड्यूसर्स हमेशा एक-दूसरे का हौसला बढ़ाने के लिए तैयार रहते हैं। उन्होंने कहा कि वे खुशी-खुशी एक-दूसरे के टेलर को प्रमोट करते हैं।

फिल्म इवेंट्स में शामिल होते हैं और साथ मिलकर सफलता का जश्न मनाते हैं। उन्हें लगता है कि इस तरह का सपोर्ट सभी के लिए एक खुशहाल और अच्छा माहौल बनाता है। बोली- 'हिंदी इंडस्ट्री में लोग सपोर्ट नहीं करते' रकुल प्रीत सिंह ने बताया कि उन्होंने क्या सीखा? उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि हम सच में पीछे हैं। मेरी ट्रेनिंग तेलुगु फिल्म इंडस्ट्री में हुई है और वह इंडस्ट्री बहुत एकजुट है। मैंने कई बार कहा है कि जब मैं बॉम्बे आई, तो मुझे

अचानक एहसास हुआ कि हर कोई इतना कॉम्पिटिटिव क्यों है? वहां भी कॉम्पिटिशन है, लेकिन लोग एक-दूसरे की फिल्मों को सपोर्ट करते हैं। दूसरी ओर, उन्होंने कहा कि हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में उन्हें अक्सर लोगों में असुरक्षा की भावना महसूस होती है। उन्होंने कहा कि इसी वजह से कई लोग खुलकर दूसरों की फिल्मों को सपोर्ट नहीं करते हैं।

रकुल प्रीत सिंह ने आगे कहा, 'हम एक-दूसरे की फिल्म की स्क्रीनिंग या प्रीमियर में जाते थे। उसके बारे में बात करते थे या सर्वेस पार्टी में जश्न मनाते थे। ऐसा नहीं था कि कौन जा रहा है, इसलिए मैं भी जाऊंगी। हर कोई बस एक-दूसरे की मदद के लिए तैयार रहता था। मुझे लगता है कि अगर हम मुंबई की फिल्म इंडस्ट्री में भी वैसी ही भावना ले आए, तो हम सच में बहुत मजबूत बन सकते हैं। मुझे लगता है कि असुरक्षा की भावना ऐसा नहीं करने देती और यह खुद पर काम करने वाली बात है। रकुल प्रीत सिंह का मानना है कि अगर लोग एक-दूसरे का साथ दें और सपोर्ट करें, तो इंडस्ट्री और भी मजबूत हो सकती है। वर्क फ्रंट की बात करें तो उन्हें रकुल को आखिरी बार 'पति पत्नी और वो 2' में देखा गया था। इसमें आयुष्मान खुराना, वामिका गब्बी और सारा अली खान भी अहम रोल में नजर आए।

